August 2021

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue 273

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue - 273 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August- 2021

नागार्जुन के आंचलिक उपन्यास 'दुखमोचन' का नायक वास्तव में दुःखमोचन

शोधार्थी- **अस्मिता भगवान पाटील**
शोध केंद्र – डॉ.पतंगराव कदम आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज पेण, जिला-रायगड
फोन नंबर – 9022995388 , 9209608479
ईमेल - patilasmita073@gmail.com
मार्गदर्शक - **डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी**
फोन नंबर- 9421905599
ईमेल-sangitachitrakoti@gmail.com

सामान्य व्यक्ति की पीड़ा को समझकर लिखने वाले प्रगतिशील साहित्यकारों में नागार्जुन का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। नागार्जुन ने जो भोगा है, देखा है, अनुभव किया है उसी की अभिव्यक्ति साहित्य के रूप में की हैं। उपेक्षित मानव के आर्त स्वर को वाणी देने का प्रयास उन्होंने किया है। साथ ही उन्होंने सामाजिक विषमता, दरिद्रता एवं वर्ग संघर्ष के भावों को यथार्थ रूप से अंकित भी किया है। सामाजिक तथा राजनीतिक सजगता, अनुभव की विविधता और यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण उनके उपन्यास सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि बन गए। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जिस सामाजिक यथार्थ को लेकर चले थे, उसी परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य नागार्जुन ने किया है। उन्होंने भारत के बहुसंख्य श्रमजीवी किसान और मजदूर के जीवन को साहित्य के द्वारा अभिव्यक्ति दी हैं। उनके साहित्य का मूल स्वर साम्राज्यवाद तथा सामंतवाद का विरोधी है। उन्होंने अपने उपन्यासों में किसान-मजदूर संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया हैं। नागार्जुन साम्यवाद से प्रभावित आंचलिक उपन्यास के जन्मदाता है। तथा अपने युग के समाज का इतिहास उनके उपन्यासों में प्राप्त होता है। उनके उपन्यास वर्ग-भेद से मुक्त संपूर्ण जीवन दर्शन की मांग करते हुए अन्याय के विरूद्ध तीव्र संघर्ष के दृष्टिकोण को लेकर विकसित हुए हैं। "प्रेमचंद के बाद वे पहले कथाकार है जिन्होंने अपनी कृतियों में ग्रामीण जीवन की विसंगतियों को अत्यंत विशदता से अंकित किया है। जितनी गहराई में जाकर उनकी दृष्टि ग्रामीण-जीवन के यथार्थ की मिथिला की हरी-भरी भूमि पर चलने वाले वर्ग संघर्ष को सतह पर उतराती हुई वर्ग विषमता को मूर्त करती है, उसका समसामायिक कृतियों में प्रायः अभाव-सा है।"1

नागार्जुन के उपन्यासों में आंचलिकता का स्वरूप ग्रामीण है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। ग्रामीण परिवेश में प्राप्त अंधविश्वास, पाखंड, रूढ़ि-परंपराओं का भी उल्लेख उनके साहित्य का प्रमुख केंद्र बिंदु हैं और उनके उपन्यासों में भाषा का प्रयोग भी पात्रों के अनुरूप है। लोक-जीवन के विभिन्न रूप, लोक संस्कृति, तीज-त्योहार तथा विविध मान्यताओं का भी उल्लेख मिलता है। वास्तव में आंचलिक उपन्यास जनपदीय, जनजातीय, लोक संस्कृति के अभिव्यंजक होते हैं। अंचल को वाणी देना, उनकी व्यथा-कथा व्यक्त करना, चेतना की लहर उत्पन्न करना, सामाजिक- सांस्कृतिक धरोहर को चित्रित करना, धर्म-दर्शन को दर्शाना, अंधविश्वास को दिखाना आदि विविध कार्य आंचलिक उपन्यास करते हैं। अतः आंचलिक उपन्यास अंचल के जनजीवन की तस्वीर ही होते हैं। 1

'दुखमोचन' मिथिला अंचल के टमका कोइली गाँव के पुनर्निर्माण की कथा है। उपन्यास का नायक दुखमोचन एक सच्चा समाजसेवी है, जो ग्रामीण जीवन के उत्थान के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है। वह ग्राम सुधारक एवं नए युग का संवाहक है। वह रूढ़ियों तथा पुराने संस्कारों से ग्रस्त समाज के साथ संघर्ष करते हुए अंतरजातीय विधवा-विधुर विवाह को संपन्न बनाता है, अग्निकांड में पीड़ितों की सहायता कर ग्राम विकास का कार्य शुरू करता है, अस्पृश्यता का निवारण करता है तथा प्रायश्चित के नाम पर किए जाने वाले पूजा-पाठ का विरोध करता है। इस तरह सामाजिक स्थितियों में सुधार लाने का कार्य दुखमोचन करता है।

'दुखमोचन' नागार्जुन की एक समाजवादी रचना है। इसकी मूल समस्याएँ हैं-वर्ग वैषम्य, सामाजिक असमानता, शोषण, अन्याय आदि। परंतु उपन्यास का नायक दुखमोचन शील और सौजन्य का धनी एक साहसी नेता के रूप में हमारे सामने आता है। वह टमका कोइली गाँव में जब भी कोई समस्या खड़ी हो जाती हैं तो तुरंत लोगों के दु:ख दूर कर उसे सुलझाने का प्रयास करता है। दुखमोचन उदात्त भावनाओं से युक्त सुशिक्षित ग्रामीण पात्र हैं;जो कोलकाता की नौकरी छोड़कर गाँव आता है और गाँव के नवनिर्माण कार्य में जुट जाता है। अपने युवा पत्नी की असामायिक मृत्यु के कारण अधिक संवेदनशील बनकर दूसरों के दु:खों को दूर करने में ही जीवन की धन्यता मानता है। अर्थात दुखमोचन वास्तविक रूप में 'दु:खमोचन' प्रतीत होता है, इन सभी बातों को निम्नलिखित घटना प्रसंगों के आधार पर देख सकते हैं-

1. बाढ़ के राहत कार्य में मदद करना-

टमका कोइली गाँव में लगातार सत्तर घंटों से बारिश होने के कारण धरती सिकुड-सिमटकर छोटी हो गई थी। कीचड़ की चिचिर-पिचिर ने लोगों के मन की प्रफुल्लता हर ली थी। काली डरावनी रात का सन्नाटा कई गुना अधिक गहरा हो गया था। झिंगुरों की एकस्वर झंकार बरसात की इस प्रकृति को अधिक भयानक बना रही थी। धान के खेतों में पानी भरा था। ऐसे वातावरण में दुखमोचन बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए लगातार बाहर ही घूमते रहे। खुद के प्रकृति की तरफ भी ध्यान नहीं देते। लोगों के दु:खों को दूर करने में इतने व्यस्त थे कि खुद के पैर की उँगलियों के नाखून पानी में फूलकर काफी सफेद पड़ गए थे। फिर भी वह बाढ़ के राहत कार्य में ही व्यस्त रहते हैं। एक बार वह स्वयं कहते भी हैं-"कई दिनों से अखबार नहीं देखा था। बाढ़-पीड़ितों की सहायता कार्य में मशगूल रहने के कारण क्षण-भर की भी फुरसत नहीं मिली थी। अब आज काफी अखबार इकट्ठे ही देखने थे, मगर पलकें नींद की प्यासी थी।"2 दुखमोचन खुद का ख्याल न रखने के कारण उनकी मामी उन्हें डाँटती है। क्योंकि वह एक बार अगर घर से बाहर निकले तो पतंग के समान उड़ते रहते थे। उन्हें अपने घर से ज्यादा समाज की सेवा करने में ही रुचि थी।

2. रामसागर की माँ के अग्नि-संस्कार कार्य में सहायता करना-

बरसात के मौसम में रामसागर की माँ का देहांत हो जाता है। ऐसे समय मधुकांत इसकी खबर देने के लिए दुखमोचन के घर जाते हैं। खबर सुनकर दुखमोचन रात में ही रामसागर के घर पहुँच कर लाश जलाने के लिए सूखी लकड़ी की व्यवस्था में जुट जाता है। वेणीमाधव भी इस समय फुस के चार-छ पुले देने के लिए तैयार हो जाता है। क्योंकि बरसात के मौसम में गरीब गृहस्थों के यहाँ सूखी लकड़ियों का पाना बहुत कठिन होता है। लगातार कई दिनों तक जब बारिश होती है तो यह समस्या और भी बढ़ जाती है।

सूखी लकड़ियों के व्यवस्था के संदर्भ में कुछ देर सोचने के बाद दुखमोचन को एकाएक उसे काठ के अपने वे तख्ते याद आए जो तख्तपोशों की तैयारी के लिए चीरे गए थे। यह लकड़ी अच्छी किस्म की थी मगर रामसागर की माँ का अग्नि संस्कार भी होना था। इसलिए कंचन और कन्हाई को साथ लेकर दुखमोचन फौरन गए और बैलोंवाले अपने बाहरी घर से वे तख्ते निकालकर ले आए। रामसागर ने सूखी लकड़ी का यह अनोखा इंतजाम देखा तो उसकी आँखें भर आई। भर्राए गले से बोला- "दुखन भैया अपना भाई तो काम नहीं आया मगर तुम तो सगे भाई से भी बढ़कर निकले।"3 रामसागर ने दुखमोचन के पैर छू लिए। थोड़ी देर बाद अर्थी बाहर निकली और राम सागर की माँ का दाह संस्कार हुआ। दुखमोचन के प्रयत्नों के कारण ही यह सब संभव हो जाता है।

3.गाँव में मुर्दे जलाने की समस्या को दूर करना-

दुखमोचन गाँव में मुर्दे जलाने की समस्या को देखकर उसे गाँववालों की सहायता से ही दूर करने का प्रयास करता है। आम के पेड़ों का पुराना बाग नदी के किनारे दूर तक फैला हुआ था। वही गाँव के मुर्दे जलाए जाते थे। परंतु उस इलाके के पुराने जमींदार राज रत्नेश्वरी नंदनसिंहजी बहादुर की जमींदारी सरकार ने ले ली थी, मगर वह बाग नहीं ले सकी। उन्होंने चुपके से कुछ धनी किसानों को जमीन का अधिकार दिया और अधिकांश पेड़ ईंटें तैयार करनेवाली कंपनियों के ठेकेदार कटवा ले गए। इस कारण बाग बड़ी तेजी से खेतों का रूप ले रहा था। परंतु आम लोगों के लिए यह एक विकट समस्या थी कि मुर्दे कहाँ जलाए जाएँ। जमींदार नदी का कछार भी कब्जे में ले रहे थे। अत: दुखमोचन ने गाँव के लोगों की राय से एक एकड़ जमीन श्मशान के लिए छेंक रखी। वही रामसागर की माँ का दाह-संस्कार हुआ।

4. बीमारी की इलाज के लिए प्रयास करना-

मलेरिया और कालाजार ने लोगों को तबाह कर दिया था और अश्विन में एक नई किस्म की खुजली अर्थात एक विशिष्ट प्रकार का चर्मरोग फैलने लगा था। यह दाद की तरह समूचे बदन में छा जाती और गोरी सूरत को साँवली तथा साँवली को काली कर देती थी। दुखमोचन के भाई सुखदेव और छोटी बहू पर भी इस बीमारी ने हमला किया तो मामी घबरा उठी। दुखमोचन ने बार-बार होमियोपैथी और आयुर्वेद की किताबों में इस बीमारी की बाबत देखा मगर कुछ समझ में नहीं आया। यह दो-चार आदमियों का रोग तो नहीं था बल्कि आसपास के गाँव के सत्तर प्रतिशत लोग इस बीमारी से त्रस्त हो गए थे। इसलिए दुखमोचन उस इलाके के पाँच-सात नेताओं और ऑफिसरों से बार-बार मिले, मेडिकल कॉलेज के अध्यापकों और छात्राओं से सहायता की प्रार्थना की, गाँव के प्रतिनिधि मंडल की तरफ से जिला अधिकारियों तक आवाज पहुँचाई। जिसके कारण गंधक के दर्जनों पैकेट, नारियल के तेल के डिब्बे तथा नीम की टिकिया ग्राम पंचायत के दफ्तर में जमा हो गई। वह सारी चीजें लोगों में बाँट दी गई। थोड़े ही दिनों में लोगों को आराम मिलने लगा। अर्थात दुखमोचन के कारण ही बीमारी से छुटकारा मिल जाता है। इस समय मास्टर टेकनाथ जैसे विरोधी दल के सदस्य भी सहायता करते हैं।

5. रामसागर को जेल से मुक्त करना-

जनकपुर-धाम से लौटते समय रामसागर, रामानाथ और नवलकिशोर तीनों ने पाव-भर नेपाली गाँजा साथ लाया था। कागज की कई तहों में लपेटकर उसकी पुड़िया बना ली गई थी। ऊपर से जो कपड़ा डाला था उस पर अच्छी तरह से चंदन का लेप भी चढ़ाया था। रामसागर उसे चावल की गठरी में अंदर दबा लिया था फिर भी उसका दिल धड़क रहा था। नवल और रमानाथ आगे और रामसागर के कंधे पर गठरी थी। मगर आबकारी विभाग के अधिकारियों की चौकस निगरानी से बचकर निकलना कोई आसान बात नहीं थी। एकाएक

गार्ड ने लाल झंडी दिखाई तो गाड़ी रुक गई। रामसागर पकड़ा गया। उस समय दोनों दोस्त उसके साथ नहीं थे। आबकारी दरोगा ने हाथ पकड़कर रामसागर को बाहर खींचा। उसे जेल पहुँचाया गया। छोटी अदालत ने तीन हफ्तों की सादी कैद की सजा का फैसला सुनाया। पर ऐन मौके पर दुखमोचन को खबर मिल गई और उसने घटना की जमकर पैरवी की वरना रामसागर को तीन महीने की जेल की खिचड़ी खानी पड़ती।

दुखमोचन ने जासूसी छानबीन करने के बाद पता चला कि नित्याबाबू जैसे विरोधी दल के सदस्यों का ही यह सारा प्रपंच था। बाद में रामसागर को दुखमोचन की बात सच मालूम हुई। दुखमोचन उसे डाँटते भी है। परंतु दुखन के कारण ही रामसागर लहेरियासराय की जेल से रिहा हो जाता है।

6. रक्षा-समिति का निर्माण करना-

दुखमोचन नि:स्वार्थ भाव से गाँव की सेवा करना चाहता है। उसे कोई वैयक्तिक लालसा नहीं है। उसके जीवन का एक ही उद्देश्य है- गाँव का विकास करना। एक बार जब धान की खड़ी फसलों को के जलाने और चोरी-चोरी काट लेने की शिकायते जब पंचायत के सामने आयी, तो उन्हें दूर करने के बारे में पंचों ने कई उपाय सोचें। उनमें थाना से सशस्त्र सिपाहियों की मदद लेना, चौकीदारों की तादाद बढ़ाना, ग्रामरक्षा समिति का संगठन, फसलों की निगरानी के लिए तनख्वाह देकर पहरेदारों की नियुक्ति। परंतु दुखमोचन ने रक्षासमितियों के संगठन पर ही ज्यादा जोर डाला और काफी चर्चा के बाद पंचों ने इस उपाय को ही एकमात्र तरीका घोषित किया गया। जिसके कारण गाँव में रक्षा समिति का निर्माण हुआ, उसके लिए सारे कानून बनाए गए। लोगों के फसलों को सुरक्षा मिल गई। इन सभी फैसलों को व्यवहार में लाने के लिए दुखमोचन ही प्रयत्न करता है।

7. विधवा विवाह में सहायता करना-

दुखमोचन उपन्यास की माया एक बाल विधवा है,उसका पति बाढ़ में नदी को पार करते समय नाव दुर्घटना में ही मर जाता है। घर में बूढ़ी सास और आवारा देवर था। परंतु माया भाभी के आग्रह के कारण ससुराल नहीं जाती। थोड़े ही दिनों में विधवा माया, विधुर कपिल के संपर्क में आती हैं। वह एक-दूसरे को चाहने लगते हैं। दोनों की उम्र में केवल चार-पाँच वर्ष का ही अंतर था। दोनों का विचार था कि विवाह करके पति-पत्नी की तरह साथ रहें और स्वस्थ जीवन बिताएँ लेकिन यह आसान नहीं था। एक तो विधवा विवाह गाँव के लिए अनहोनी घटना थी। दूसरी समस्या यह थी कि कपिल राजपूत था और अंतर्जातीय विवाह गाँव के लिए मंजूर नहीं था। गाँव में नित्याबाबू जैसे सनातनवादी पीढ़ी के समर्थक थे, जो इसका विरोध करते है। उनके अनुसार विधवा माया और विधुर कपिल का विवाह एक धर्म संकट अथवा घोर कलियुग है। परंतु माया को विश्वास था कि दुखमोचन के समझाने से उसके भाई और माँ इस विवाह के लिए जरूर राजी हो जायेंगे। दुखमोचन पर उसे पूरा विश्वास था इसके संदर्भ में माया कहती है-" क्या कर लेंगे नित्याबाबू? दुखमोचन भाई अगर हमारी पीठ पर अपना हाथ रख दें तो किसी की नहीं चलेगी। नित्याबाबू को अब पूछता है कौन है?"4 अतः कपिल पत्र में यह प्रेम कहानी लिखकर दुखमोचन को देता है। दुखमोचन माया की माँ और वेणीमाधव को समझाकर माया कपिल का ब्याह कर देते हैं। नित्याबाबू इस मामले में रुकावट डालने का कार्य करते हैं परंतु दुखमोचन की सहायता से कपिल और माया शादी के बंधन में बंध ही जाते हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि वेणीमाधव के बूढ़े ताऊ ने दुखमोचन को चांडाल, पापी, विधर्मी कहकर छडी से बहुत पिटाई की। उसे नीलमाधव की कोठरी में बंद भी किया। मामी को जब यह बात पता चलती है तो उसे बहुत ही दु:ख होता है। दुखमोचन को इतनी

परेशानी होने के बाद भी वह पीछे नहीं हटते बल्कि निरंतर समाज के लिए कार्य ही करते रहे। कपिल और माया का अंतर्जातीय विवाह कर उन्होंने समाज के सामने आदर्शवादी दृष्टिकोण ही प्रदान किया है।

माया और कपिल की तरह दुखमोचन लखनौली की एक लड़की को भी सहायता करते हुए दिखाई देते हैं। लखनौली की एक लड़की जनकपुर के मेले में गायब हो गई थी। ढाई महीने बाद पटना के अनाथ महिला आश्रम में उसका पता चलता है, परंतु समाज के डर से घरवाले उसे वापस लेने तैयार नहीं होते। ऐसे समय दुखमोचन ने उन्हें समझाया तो वे राजी हो गए और लड़की घर लौट आयी। बाद में दुखमोचन ने खादी भंडार के कार्यकर्ता से उसकी शादी करवा दी। इस बारे में अखबारोंमें भी खबर छपी थी कि-"मैथिल विधवा की भूमिहार युवक से शादी" अर्थात दुखमोचन विधवा विवाह में सहायता करते हुए दिखाई देते हैं। वास्तव में विधवा समस्या का समाधान उनका पुनर्विवाह होने मे ही हैं।

8. मजदूर स्त्रियों को न्याय देना -

'दुखमोचन' उपन्यास में टमका कोइली गाँव की पानी भरने वाली स्त्रियाँ मजदूरी बढ़ाने के लिए हड़ताल कर देती है। गाँव के पनभरनी स्त्रियों ने काम ज्यादा और मजदूरी कम होने के कारण काम करना छोड़ दिया था। इस बारे में दुखमोचन ने मामी से बातचीत की तो मामी भी महरियों के वेतन बढ़ाने के बारे में कुछ करने के लिए कहती हैं। आखिर दुखमोचन के प्रयत्न से पंचायत ने आठ आना प्रति घड़ा मजदूरी निश्चित की। मजदूरी बढ़ाने पर सारी महरियाँ काम पर वापस आती है। जैसे-"पानी भरने वाली मजदूरनियों के बारे में दुखमोचन की सिफारिश पर पंचों ने यह निर्णय दिया कि फी घड़ा आठ आना मिलना चाहिए। याने यदि कोई मजदूरनी किसी परिवार को प्रतिदिन चार घड़े पानी देती है तो दो रुपये महावार पाएगी। मजदूरनियों ने इस फैसले को खुशी-खुशी मान लिया। डेढ़ महीने तक अनियमित रूप में चलने के बाद हड़ताल अपने-आप और पहले ही समाप्त हो चुकी थी।"5अर्थात दुखमोचन के प्रयत्नों के कारण ही पनभरनी स्त्रियों को न्याय मिलता है।

9. रास्ते के मरम्मत का कार्य करना-

टमका कोइली से दक्षिण की ओर डेढ मील तक की कच्ची सड़क बाढ़ में चौपट हो गई थी। लेकिन काम तो बहुत था। परंतु दुखमोचन ने गाँव के सड़क सुधार का काम शुरू किया। मजदूर आधी मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं तथा संपन्न परिवारों के एक-एक आदमी बिना मेहनताना लिए ही काम करने लग जाते हैं। ग्राम रक्षा समिति के जवान भी मदद के लिए आते हैं। असल काम तो मजदूर और मामूली ग्रामीण ही कर रहे थे। रास्ते के दोनों ओर खेतों में से मिट्टी काटकर रास्ता ऊँचा किया जाता है। इसी समय डिविजनल ऑफीसर को किसी गुमनाम चिट्ठी मिल गई कि निकटवर्ती खेतों से भूमि का थोड़ा हिस्सा बाँध में मिलाया जा रहा है। इस बात की तहकीकत करने के लिए एस.डी.ओ साहब आए थे। पर सड़क का काम देखकर उन्हें प्रसन्नता ही हुई। लेकिन दुखमोचन को जब यह बात पता चलती है तो बहुत ही निराश हो जाता है, परंतु हार नहीं मानता। ऐसे में दुखमोचन मौका पाकर सब डिविजनल ऑफीसर से शिकायत के स्वर में कहते हैं- "सात-आठ मील का यह चालू रास्ता अब और कितने दिन तक कच्ची हालत में पड़ा रहेगा, पता नहीं। मिट्टी तो हम इस पर काफी जा रहे हैं, मगर बाढ़ फिर धो-पोंछकर साफ कर देगी हुजूर ! कोई ऐसा तरकीब नहीं निकल सकती जिससे इस सड़क का कायाकल्प हो जाए?"6 पर निश्चित अवधि से एक दिन पहले ही सड़क के मरम्मत का काम पूरा हो जाता है।

कोई भी कार्य करते समय दुखमोचन को शारीरिक और मानसिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। परंतु गाँव पर आये संकटों का वह अपने दिमाग से मुकाबला करता है और सभी समस्याओं का हल ढूँढता है, उसमें उसे कामयाबी भी हासिल होती है।

10. गाँव के पुनर्निर्माण का कार्य-

हरखू की बूढ़ी माँ शाम को हुक्का पी रही थी। बुढ़िया ने जोर का कश खींचा तब सुलगती तंबाकू की टिकिया से चिनगारियाँ भड़क उठी। अर्थात हरखू की अम्मा के गलती के कारण ही सारा गाँव जलकर खाक हो जाता है। क्योंकि उस गाँव में खपरैल से ज्यादा फूस के ही मकान थे। "जहाँ-तहाँ घर जलने लगे। 'आग, आग' 'दौड़ो-दौड़ो' की चीख-पुकार मच गई। जो जहाँ था वहीं से दौड़ पड़ा। भागते लोग एक-दूसरे से पूछते- कहाँ, किधर?"7 दस मिनट में पास-पड़ोस के पच्चीसों घर ज्वालाओं के लपेट में आ चुके थे। ऐसे समय दुखमोचन घर में बैठना ठीक नहीं समझता और वह गाँव में सहायता करने के लिए पहुँच जाता है। पड़ोसी गाँव के रक्षा समितिवाले भी साहयता करने कर पहुँच जाते हैं। दुखमोचन घंटों घूम-घूमकर गाँव भर की आग बुझाते रहें। जिससे उनके हाथ तो काले हो ही गए थे, बल्कि हथेलियाँ भी सूज गई थी, एक-एक ऊँगली में पाँच-पाँच फफोले निकल आए थे। पैरों का भी यही हाल था। मास्टर टेकनाथ, बोधू चाचा, वेणीमाधव, कपिल सभी की यही स्थिती थी।

अग्निकांड के समय दुखमोचन सोचता है कि अगर समूची बस्ती खपरैल के मकानों की होती तो गाँव की यह हालत नहीं होती। अतः उसने गाँव के पुनर्निमाण के कार्य का प्रारंभ किया। पास-पड़ोस के देहातों ने बाँस-काठ-फूस-अनाज और श्रमशक्ति द्वारा टमका कोइली के दुर्दशाग्रस्त लोगों की सहायता की। माया, कपिल और लीलाधर झा भी दुखमोचन को इस साहयता कार्य में मदद करते हैं। नित्याबाबू जैसे विरोधी दल के सदस्य भी गाँव के पुनर्निर्माण के समय सहायता पाना चाहते हैं, दुखमोचन ऐसे वक्त सभी को एक ही नजर से देखकर बिना किसी भेदभाव के सहायता करते हैं। वेणीमाधव को यह बात पसंद नहीं आती तो दुखमोचन उसे समझाते हुए कहते हैं - "नित्याबाबू की हरकतों से हमारा काफी नुकसान हुआ है और आगे भी हो सकता है, लेकिन इस वक्त तो हम बिना किसी भेदभाव के उनकी सहायता करेंगे।"8

उसी प्रकार दुखमोचन गाँव की कन्या पाठशाला की बुरी हालत देखकर उसकी जिम्मेदारी लीलाधर मामा पर सौंप देता है और मामी तथा माया की सहायता से उसमें सुधार लाने का कार्य करते हैं। अग्निकांड के बाद गाँव के पुनर्निर्माण के समय दुखमोचन समूचे गाँव को साथ लेकर उनका संगठन करता है तथा उनमें ग्राम-विकास की नई चेतना का संचार करवाता है। दुखमोचन का पूरा व्यक्तित्व समाज कल्याण के लिए समर्पित है। उपन्यास का नायक दुखमोचन अपने गाँव को सुंदर और आदर्श बनाने के सपने देखता है और वह सपने साकार करने के लिए दिन-रात निःस्वार्थ भाव से मेहनत भी करता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि "दुखमोचन" उपन्यास का नायक दुखमोचन एक ऐसा व्यक्ति हैं जो समाज के विकास के लिए निरंतर प्रयत्न करता है। गाँव में जब कोई समस्या खड़ी हो जाती है तो तुरंत उसे सुलझाने का प्रयास करता है। लोगों के दु:ख-दर्द को मिटाता है। हर बार समस्याओं से झगडता है, उसका डटकर मुकाबला करता है और अंत में उसे अपने कार्य में कामयाबी भी पाता हैं। परंतु कई बार समाज सेवा का कार्य करते समय गाँव के अन्य लोग उनके कार्य में बाधाएँ निर्माण करते हैं। परंतु दुखमोचन कभी विचलित नहीं होता अंत तक अपनी लड़ाई शुरू रखकर अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता है। इसलिए उपन्यासकार नागार्जुन ने उसे

लोकनायक के रूप में चित्रित किया है। "दुखमोचन में परदुखकातरता के साथ गहरी मानवीयता हैं, मानवता के प्रति गहरी आस्था है। वैचारिक मतभेद एवं भिन्न-दृष्टि करने वालों के प्रति उसके मन में किसी प्रकार का द्वेषभाव नहीं रहता। जरूरत पड़ने पर वह उनकी मुक्त-हस्त से मदद करता है।"9 दुखमोचन हर वक्त जनता के कष्टों को उनके दु:खों को दूर करने का प्रयास करता है। उसके कारण ही गाँव का सामाजिक विकास होता है। असल में दुखमोचन क्रांतिधर्मी चेतना से संपृक्त पात्र हैं। इसलिए प्रस्तुत उपन्यास का नायक 'दुखमोचन' वास्तव में दु:खमोचन प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. प्रा. घरत अर्जुन जानू - कथाकार नागार्जुन एवं बाबा बटेश्वरनाथ,अतुल प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण:1997, पृ.सं. 5
2. वही,पृ.सं.15
3. वही,पृ.सं.27
4. डॉ.राय अवधेश कुमार-कथाकार बाबा नागार्जुन, अनंग प्रकाशन दिल्ली,प्रथम संस्करण: 2006,पृ.सं.134
5. वही,पृ.सं.135
6. डॉ. सगरे भरत - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में दलित जीवन, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटरर्स कानपुर, प्रथम संस्करण: 2011,पृ.सं.14
7. डॉ. भस्मे दिलीप - नागार्जुन के आंचलिक उपन्यास, अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण: 2005, पृ. सं.20
8. डॉ. घरत अर्जुन जानू - नागार्जुन के साहित्य में आँचलिकता,अतुल प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण: 2012, पृ.सं.54
9. नागार्जुन- दुखमोचन, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति:2007, पृ.सं.13
10. वही पृ.सं.11
11. वही पृ.सं.69
12. वही पृ.सं.102
13. वही पृ.सं.96
14. वही पृ.सं.103
15. वही पृ.सं.107